

आलस्य और अलबेलापन - 46

अव्यक्त बापदादा :- (16. 12. 93)

» _ » सभी अपने को सदा उमंग-उत्साह से उड़ने वाली आत्मायें अनुभव करते हो? सदा उमंग-उत्साह बढ़ता रहता है या कभी कम होता है कभी बढ़ता है? क्योंकि जितना उमंग-उत्साह होगा उतना औरों को भी उमंग-उत्साह में उड़ायेंगे। सिर्फ स्वयं नहीं उड़ने वाले ही लेकिन औरों को भी उड़ाने वाले हो। तो उमंग उत्साह ये उड़ने के पंख हैं। अगर पंख मज़बूत होते हैं तो तीव्र गति से उड़ सकते हैं। अगर पंख कमज़ोर होंगे और तीव्र गति से उड़ने की कोशिश भी करेंगे तो नहीं उड़ सकेंगे, बार-बार नीचे आयेंगे। तो उमंग-उत्साह के पंख सदा मज़बूत हों। कभी कमज़ोर, कभी मज़बूत नहीं, सदा मज़बूत। क्योंकि अनेक आत्माओं को उड़ाने की ज़िम्मेवार आत्मायें हो। विश्व कल्याण करने की ज़िम्मेवारी ली है ना?

» _ » तो सदा इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी स्मृति में रहे। जब कोई भी ज़िम्मेवारी होती है तब जो भी काम करेंगे तो तीव्र गति से करेंगे और ज़िम्मेवारी नहीं होती है तो अलबेले होते हैं। तो हरेक के ऊपर कितनी बड़ी ज़िम्मेवारी है। सभी ने यह ज़िम्मेवारी का संकल्प लिया है? या सोचते हो कि यह बड़ों का काम है, हम तो छोटे हैं-ऐसे तो नहीं। यह तो पुराने जाने हम तो नये हैं - ऐसे तो नहीं। **चाहे बड़े हों, चाहे छोटे हों, चाहे पुराने हों, चाहे नये हों, लेकिन ब्राह्मण बनना अर्थात् ज़िम्मेवारी लेना। चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं लेकिन हैं तो बी के या और कुछ हैं?**

» _ » तो बी.के.अर्थात् ब्राह्मण बनना और ब्राह्मणों की ज़िम्मेवारी है ही। तो ये ज़िम्मेवारी की स्मृति कभी भी आपको अलबेला नहीं बनायेगी। लौकिक कार्य में भी जब कोई ज़िम्मेवारी बढ़ती है तो आलस्य और अलबेलापन आता है या चला जाता है? अगर कोई कहेगा भी ना कि चलो थोड़ा आराम कर लो, बैठ जाओ, क्या करना है, तो बैठ सकेंगे? तो ज़िम्मेवारी, आलस्य और अलबेलापन खत्म कर देती है। **तो चेक करो कि कभी भी आलस्य या अलबेलापन तो नहीं आ जाता? चल तो रहे हैं, हो जायेगा - ये है अलबेलापन। आज नहीं तो कल हो जायेगा-ये आलस्य है।**

» _ » कल नहीं, आज भी नहीं, अब क्योंकि कोई भरोसा नहीं। अगर अधूरा पुरुषार्थ रह गया तो कहाँ पहुँचेंगे? सूर्यवंश में या चन्द्रवंश में? आधा पुरुषार्थ रहा तो प्रालब्ध भी आधी मिलेगी ना तो चन्द्रवंश में जाना है? नहीं जाना है? कोई एक भी नहीं जायेगा? मातायें भी सभी सूर्यवंशी बनेंगी? अच्छा क्योंकि जब पाना है तो पूरा ही पायें ना। आधा पाना तो समझदारी नहीं है। **समझदार सदा ही स्वयं को पूरा अधिकारी बनायेगा क्योंकि बच्चा अर्थात् अधिकारी।** तो ऐसी अधिकारी आत्मायें हो या कभी-कभी थक भी जाते हो? अधिकार लेते-लेते थक तो नहीं जाते? कभी मन में थक जाते हैं-कहाँ तक करेंगे?

» _ » अथक हैं, थकने वाले नहीं हैं। **थकना काम चन्द्रवंशियों का है और अथक रहना ये सूर्यवंशी की निशानी है।** क्या भी हो जाये लेकिन सदा अथक। जिसकी उमंग-उत्साह होता है वह कभी थकता नहीं। उमंग कम होगा तो थकावट ज़रूर आयेगी। उमंग-उत्साह वाले सदैव अपने चेहरे से औरों को भी उमंग दिलाते रहेंगे। तो अपने चेहरे और चलन से सदा औरों को भी उमंग-उत्साह में बढ़ाते रहो। ऐसी चलन हो जो कोई भी देखे तो सोचे कि ये उमंग-उत्साह में सदा कैसे रहता है?

» _ » जैसे कोई बहुत खुश रहता है तो उसको देख करके दूसरे भी खुश हो जाते हैं ना। कोई रोने वाले होते हैं तो रोने वाले को देखकर दूसरे क्या करेंगे? अगर रोयेंगे नहीं तो मुस्करायेंगे भी नहीं। तो आपकी चलन और चेहरा ऐसे हैं? फ़लक से जवाब दो कि हम नही होंगे तो कौन होगा। कल्प-कल्प के आप ही हैं

और सदा ही रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना तो हम ही थे और हम ही रहेंगे।
पक्का है ना? जब सीजन ही उड़ने की है तो उड़ने के समय पर गिरना तो अच्छा
नहीं होता है ना तो उड़ने वाले हैं और उड़ाने वाले भी। कभी भी, कोई भी बात
आये तो याद करो कि हम कौन हैं? हमारी क्या ज़िम्मेवारी है?

➤➤ जितना उमंग उत्साह होगा उतना औरों को भी उड़ायेंगे

➤➤ ➤ ➤ पंख चाहिए

→ उमंग उत्साह के

→ शक्तिशाली हो

→ सदा मजबूत हो

➤➤ ➤ ➤ क्योंकि अनेक आत्माओं को उड़ाने की जिम्मेवार आत्मायें हो

➤➤ ➤ ➤ जब कोई जिम्मेवारी होती है तो कोई भी काम करेंगे तो

→ अलर्ट होकर करेंगे

→ उमंग उत्साह से करेंगे

→ दिल से करेंगे

→ अपना समझकर करेंगे

→ तीव्र गति से करेंगे

➤➤ ➤ ➤ ब्राह्मण बनना अर्थात जिम्मेवारी लेना

➤➤ ➤ ➤ जितनी जिम्मेवार आत्मा होगी तो आलस्य अलबेलापन नहीं आयेगा

→ आलस्य

■ शारीरिक

■ सुस्ती

■ नींद

→ अलबेलापन

■ मानसिक तल

■ केयरलेसनेस

■ गैर जिम्मेवार

➤➤ संगठन मे एक में ही बहुत उमंग उत्साह होने से

➤➤ ➤ ➤ जैसे बीमारी संक्रामक होती है वैसे फैलती है।

➤➤ ➤ ➤ जैसे एक को उबासी आती है तो सबको आने लगती है।

➤➤ ➤ ➤ एक करता है तो दूसरे को भी लगता है कि जरूरी है तो वो भी करने लगता है।

➤➤ ➤ ➤ हम उड़ सकेंगे तो दूसरो को भी उड़ा सकेंगे

➤➤ RESPONSIBILITY

➤➤ ➤ ➤ RESPONSIBILITY - Response करने की ability

→ Response करने वाला जागृत अवस्था में होगा

→ करने की क्षमता होगी

→ होश में होगा

» _ » स्वयं उमंग उत्साह में रहना और दूसरों को भी उमंग उत्साह दिलाने के लिए आवश्यक है :-

→ स्वयं को उमंग उत्साह में रखने के लिए नवीनता हो

→ पुरुषार्थ करने का उमंग निरंतर बना रहे

→ ज्ञान की गहराई में जाने का उमंग निरंतर बना रहे

→ नये नये योग के प्रयोग करने का उमंग

»» ब्राह्मण आत्माओं की जिम्मेवारी

» _ » परमात्म संदेश विश्व के कोने कोने तक पहुंचाना

» _ » हर आत्मा का परमात्मा से मिलन कराना

» _ » विश्व परिवर्तन करना

» _ » इस धरा पर स्वर्ग लाकर रहेंगे

» _ » आत्माओं में शक्ति भरना

» _ » दुखों से मुक्त करना, भय से मुक्त करना

» _ » निर्जीव आत्माओं में शक्ति भरना, अशांति से मुक्त करना

» _ » सभी आत्माओं को संतुष्ट करना, तृप्त करना

» _ » प्रकृति को पावन करना

» _ » यज्ञ की सम्भाल करना, यज्ञ को निर्विघ्न बनाना

» _ » कुमारों को सम्भाल कर रखना

→ एक कुमार में ही अनन्त शक्तियां समाई हुई हैं।

→ एक कुमार ही बहुत कुछ कर सकता है।

→ कुमार सेंटर की शोभा है।

→ एक कुमार ही सेंटर पर सारे प्रोग्राम को सम्भाल लेता है।

» _ » ज्ञान की चर्चा करना, ज्ञान को फैलाना, ज्ञान के भाव को समझना

» _ » अपनी कमियों को निकालना

» _ » सब आत्माओं का कल्याण करना

»» उमंग-उत्साह वाले सदैव अपने चेहरे से औरों को भी उमंग दिलाते रहेंगे।

» _ » अथक - जो कभी न थके। जिसको उमंग उत्साह होता है वो कभी थकता नहीं।

» _ » ऐसी चलन हो जो कोई भी देखे तो सोचे कि ये उमंग-उत्साह में सदा कैसे रहता है ?

→ ये कभी थकते ही नहीं

- हमेशा मुरली ही पढते रहते
- कुछ न कुछ पढने मे ही लगे रहते
- कभी तो आराम करना चाहिए
- कभी तो ज्ञान योग की छुट्टी करें

» _ » कोई सदैव रोते रहेंगे व उनकी सदा कम्प्लेंट रहती है

- इसने ये किया वो किया
- ये चाहिए था वो नहीं
- ये डिपार्टमेंट अच्छा नहीं
- यहां के लोग अच्छे नहीं
- ठंड बहुत है गर्मी बहुत है

» _ » उमंग कम होगी तो थकावट अनुभव होगी

» _ » थकान के तीन तल है

- शारीरिक तल - कुछ भी काम करते है तो थकावट होती है
- आपातकालीन तल - जिसमे कोई परिस्थिति आने पर शक्ति बढ जाती है।

■ जैसे भूकम्प आता है तो फटाफट भागते है

■ दूसरो को देखकर या समूह को देखकर शक्ति जागृत हो जाती है।

- जागृति का तल - जब आत्मा वहां सक्रिय हो जाती है तो थकान नहीं होती कितना भी कार्य कर सकते है।

